रात्रिक्लास 18-6-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप कहते हैं मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ कर यहां बैठना है। फिर भी भूल जाते हैं इसलिए आगे भी रोज़2 बाप ने समझाया है अपन को आत्मा समझो। शिवभगवानुवाचः। परमात्मा है भी ज्ञान का सागर। बाप भी कहेंगे मैं मनुष्य-सृष्टि का बीज रूप हूं। हमको इस रचना के आदि-मध्य-अन्त का नालेज है। क्योंकि मैं मनुष्य सृष्टि का बीज रूप हूं। कोई मनुष्य नहीं समझते हैं। तुम्हारा गुरु है शिव बाबा का तो गुरु नहीं है। परमपरा गुरु करने का रिवाज चला आता है। परन्तु यह भक्ति मार्ग में कहते हैं। सतयुग त्रेता में तो होता ही नहीं है रसम-रिवाज़। अभी तुम भी कहते हो हम ने भीगुरु किया है। वह मनुष्य को गुरु करने का रिवाज है। अभी तुमको मिला है सद्गुरु। वह अनेक गुरु। यह एक सद्गुरु। इनका भी गायन है भक्ति मार्ग में। सिक्ख लोग भी मानते हैं सद्गुरु अकाल मूर्त। यह महिमा कृष्ण को कब नहीं करेंगे। एक भगवान की महिमा अलग है। उन से वरसा लेते हैं ब्राह्मण। देवता बनने का वरसा लेते हैं। मनुष्य से देवता बाप ही बनाते हैं। नहीं तो देवता पद कहां से आया। भगवान पढ़ाते हैं बच्चों को जिससे इतना पद मिलता है। बाबा पढ़ाते हैं। आपे ही सिध करते हैं शिव बाबा पढ़ाते हैं। शिव बाबा पतित पावन सदगतिदाता भी है। एक्युरेट अक्षर निकलते हैं ना। सदगति माना हो स्वर्ग की बादशाही। सतयुग की गदी। यहां तो कोई गदी नहीं है। गदी राजाओं को मिलती है। यहां तो गदी है नहीं। वह कोई बाप से वरसा नहीं पावेंगे। उन्होंने गदी पाई कर्मों की हिसाब से। वह यहां गदी तो पा न सके। मुश्किल है। राजाओं की बुधि धन-दौलत महल ही रहते हैं। कश्मिर का राजा मरा वह आर्य-समाजियों को अपना धन देकर गया। उसक रिटर्न तो आर्यसमाजी नहीं दे सकते। भगवान तो रिटर्न देते आये हैं भक्ति मार्ग में। वह है हद के। अभी बाप रिटर्न देते हैं बेहद के। उनको वरसा ही कहा जाता है। बच्चे समझते हैं भगवान पढ़ाते हैं। शिव बाबा पढ़ाते हैं तो याद किया ना। मन्मनाभव हो गया। हम स्टुडन्ट्स हैं। एमआबजेक्ट है हम नर से नारायण बनने आये हैं। टीचर को याद करो तो भी बात वही रहती है। बच्चे समझते हैं बाप ने पक्का कराया है हम आत्मा अविनाशी है। हमारा बाप परमात्मा है। भक्ति-मार्ग में भीउनको पुकारते रहते हैं। शिव बाबा2 कितना करते हैं। शिवकाशी फिर कहते विश्वनाथ गंगा। काशी वाला शिव विश्वनाथ वह तो ठीक है। गंगा फिर पिछाड़ी में अक्षर लगा दिया है। यह भी तुम जानते हो शिव बाबा और यह नांदियां पारस नाथ बनाती हैं। वह सभी भक्ति मार्ग की उल्टी बातें हैं। तुम अभी शिव बाबा के कंठे पर बैठे हो। ज्ञान गंगाएं भी हो। कहां भी बैठो यह पक्का कर लो। शिव बाबा याद है और सृष्टचक्र याद है? तुम लिख भी सकते हो 84 का चक्र याद है? शिव बाबा याद है यह जहां-तहां लिखा हुआ होगा तो याद रहेंगे। दिन-प्रति-दिन एडीशन होती जाती है। जब कि हम बाप के बच्चे हैं तो बाप स्वर्ग का रचयिता है तो हमें भी स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। हमें जरूर स्वर्ग के मालिक बनने चाहिए। सभी एक बाप के बच्चे हैं। तो क्यों नहीं हम भी मालिक बनें। सो तो पढ़ाई से बनेंगे ना। बाप भारतवासियों को ही पढ़ाते हैं। बाप ने कोई समय में वरसा दिया है इसलिए हर वर्ष शिव-जयन्ति बनाते हैं। किसलिए मनाते हैं वह समझ नहीं सकते हैं। शिव बाबा ने आकर स्वर्ग का मालिक बनाया। तुम जानते हो शिव बाबा आकर पढ़ाते हैं। तो उन से पहले वरसा श्रीकृष्ण को मिलता है आद2। प्रिन्स-प्रिन्सेज राजा-रानी बनते हैं। और प्रजा भी बनती है। हम राजा बनते हैं तो प्रजा शाहुकार गरीब आद भी बनेंगे। यह बातें बाप बच्चों को समझाते हैं इसलिए कि याद कर और फिर औरों को रास्ता बताओ। आबू में प्रदर्शनी पहले भी रची थी जो फिर रचे हैं औरों को रास्ता बताने। पवित्र भी बनना है। पवित्र सतोप्रधान बन जावेंगे तो फिर 21 जन्म तुमको राजाई मिलेगी। टेम्पटेशन है ना। झट प्रतिज्ञा कर लेंगे। फिर माया घुटका खिलाती है। माया बड़ी जबरदस्त है। बच्चे भी समझ जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे। क्यों नहीं मीठे2 कहेंगे। अभी पुरुषोत्तम संगम युग पर हो तुम मनुष्य से देवता बन सकते हो। सतयुग को पुरुषोत्तमयुग नहीं कहेंगे। कल्याणकारी पुरुषोत्तमयुग है ही संगम युग। अच्छा बच्चों को बुडनाईट और नमस्ते।